# 1. शिकारी मानव

एक समय था जब दुनिया भर में कहीं भी खेती नहीं होती थी। न कहीं गांव थे, न शहर। उन दिनों लोग कैसे रहते थे ? इन चित्रों को देखो-

*लोग खाना कैसे इकट्ठा कर रहे हैं?*

*चौथे चित्र को देखो। लोग जंगल से क्या-क्या चीज़ें लेकर लौटे हैं?*

*तुम्हें इन चित्रों में छः – सात औज़ार व हथियार दिखाई देंगे। उन्हें ढूंढो। वे किस काम आ रहे हैं? उनके चित्र तुम कापी में बनाओ।*

*चित्र-1 के लोगों के पास सामान बटोरकर लाने के लिए क्या चीज़ें हैं?*

*चौथे चित्र में गुफा में दिखाई दे रहा हर व्यक्ति क्या काम कर रहा है?*

आज से हज़ारों साल पहले हमारे **पूर्वज** कुछ इसी तरह रहते थे। जैसा कि चित्रों में दिख रहा है, उन्होंने बहुत सी चीज़ें बनाना सीख लिया था और बहुत से काम भी सीख लिये थे।

### भोजन, पहनावा और घर

दुनिया में जगह-जगह, जंगलों के बीच, बीस-तीस लोगों के छोटे-छोटे झुण्ड हुआ करते थे। वे लोग जंगल में हिरण, भैंसा, हाथी, शेर और खरगोश जैसे जानवरों का शिकार करके खाते थे। वे नदियों व तालाबों में मछली पकड़ते थे। मधुमक्खी के छत्तों से शहद भी इकट्ठा करते थे। वे जंगली पेड़ों के फल तोड़ लाते, पौधों की मीठी जड़ें और कंद (आलू व शकरकन्द जैसे) खोद लाते और जंगलों में अपने आप उगे जंगली अनाज को काट लाते। वे ज़्यादातर कन्द, फल, सब्ज़ी आदि खाते थे और थोड़ा बहुत मांस भी खाते थे। यही सब उनका भोजन था।

उन लोगों को पहनने की चीज़ें भी जानवरों और पेड़ों से ही मिलती थीं। वे जानवर की खाल साफ करके पहनते थे, या, पेड़ की पत्तियों और छाल से शरीर ढक लेते थे।

*वे लोग ऊनी और सूती कपड़े क्यों नहीं पहन सकते थे- ज़रा सोचकर बताओ।*

*वे लोग क्या-क्या खाते थे, एक सूची बनाओ।*

*उनका अधिकांश भोजन किससे मिलता था - जानवरों से या पेड़-पौधों से?*

मनुष्य जब इस तरह रहता था - वे बहुत पहले के दिन थे।

लोग तब घरों में भी नहीं रहते थे। जहां कहीं **गुफा** या चट्टानों के नीचे सिर छुपाने की जगह मिल जाती थी, वे वहीं रह लेते थे। कहीं चट्टान या गुफा न मिले तो झटपट पेड़ों की डालियों और पत्तों से छोटी-छोटी झोपड़ियां खड़ी कर लेते थे।

### आओ कल्पना करें

इतने साल पहले जो लोग रहते थे, उनके बारे में हम ठीक-ठीक तो पता नहीं कर सकते हैं। मगर हां! उस समय की बची हुयी चीज़ों को देखकर और अपनी सूझ-बूझ से कुछ कल्पना ज़रूर कर सकते हैं। चलो सोचें, जो लोग शिकार करके और जंगलों से भोजन बटोरकर जीते थे और जो खेती नहीं करते थे - उनका जीवन कैसा रहा होगा।

## एक कहानी - घुमक्कड़ लोग

तो कल्पना करो कि हज़ारों-हज़ारों साल पहले कुछ लोगों का एक झुंड एक जंगल में रहता था। झुंड में चौदह साल की एक लड़की थी। उसका नाम था करमी। वह एक दिन जब फल और कंद बटोरने गई थी तो एक भेड़िये ने उसे धर दबोचा था। वह बड़ी मुश्किल से जान बचाकर लौटी थी। वह बहुत दिलेर लड़की जो थी।

इस बात को कई दिन हो गए थे, पर करमी के पैर का घाव ठीक नहीं हुआ था। उसका शरीर तप रहा था। वह हिल-डुल नहीं पा रही थी। झुंड के आधे लोग कह रहे थे, "करमी अब ठीक नहीं होगी। इसे यहीं छोड़ दो। आगे जाना है। जंगल में अब शिकार नहीं मिलता। पानी के गड्ढे सब सूख चुके हैं। जानवर जंगल छोड़कर पानी की तलाश में आगे निकल गए हैं। फल भी खत्म होने को आए। ऐसे में गुज़ारा नहीं होता। करमी के लिए हम यहां रुके तो हम सब भूखे मर जायेंगे। चलो आगे चलें।"

करमी जैसी बहादुर और चतुर लड़की को यों मरने छोड़ देने की बात पर झुंड के कई लोग दुखी थे। वे बोले, "कुछ दिन और रुकते हैं। कुछ दिनों का काम तो चला ही लेंगे।" करमी की मां बोली, "चार-पांच दिन रुको। चार-पांच दिन तक खाने की कमी नहीं होगी। आज सुबह मैं जहां गई थी वहां मीठी जड़ों के खूब सारे पौधे हैं।" पर, कई लोग नहीं माने। बोले, "जिनको रहना है रहें। हम आगे जाएंगे। इस जंगल में अब आठ-दस लोगों का गुज़ारा तो हो भी जाए, पर सबका नहीं होगा।"

झुंड में सलाह मशविरा "करमी के साथ क्या करें?"

झुंड के बड़े-बूढ़ों को लगा कि यह तो बहुत गंभीर बात हो रही है। तब उन्होंने पूरे झुंड की महिलाओं और पुरुषों को एक साथ बैठाकर सलाह- मशविरा किया। बहुत सोच विचार के बाद यह तय हुआ कि झुंड के कुछ लोग करमी और उसकी मां के साथ रहेंगे। बाकी दूसरे जंगल में जाकर इंतज़ार करेंगे। यह तय होने पर झुंड के कुछ लोग दूसरे जंगल को चल दिये।

करमी की मां सोचती रही, अगर करमी तीन-चार रोज़ में ठीक नहीं हुई तो क्या होगा? फिर तो यहां कोई नहीं टिकेगा।

बड़े संकट के दिन थे। जो लोग रुक गए उन्हें यही डर रहता कि कभी कोई जंगली जानवर हमला कर दे तो करमी को लेकर कैसे भागेंगे और कैसे अपनी जान बचाएंगे।

रात होने को आई। करमी ने दर्द के मारे आंखें मींच लीं और पास खड़े पेड़ की छाल को मुट्ठी में भींच लिया। करमी ने छाल को तोड़कर अपने घाव पर लपेट लिया। फिर उसकी नींद लग गई। सुबह उठी तो पाया कि दर्द बहुत कम हो गया है। पैर कुछ उठा पा रही है। फिर क्या था! करमी को अपना इलाज मिल गया था। क्या छाल थी! घाव बिल्कुल ठीक कर दिया!

दो-तीन दिन बाद करमी मां का सहारा ले-लेकर आगे को चल पड़ी। दूसरे जंगल में पहुंचकर वे अपने झुंड के बाकी लोगों के साथ मिल गये।

*झुंड के कई लोग करमी को छोड़कर दूसरे जंगल क्यों जाना चाहते थे?*

*करमी की मां ने उन्हें रोकने के लिए क्या-क्या कहा? अंत में क्या तय हुआ?*

तुमने अभी एक काल्पनिक कहानी पढ़ी।

कुछ ऐसा ही होता होगा उन दिनों। सही तो है, शिकार या फल हमेशा एक ही जगह नहीं मिलते रह सकते थे। इसलिए जब एक जंगल में शिकार, फल आदि मिलने बंद हो जाते, तो झुंड के लोग भोजन की तलाश में दूसरी जगह को चल पड़ते थे। जब उस जंगल में फिर से फल लगने का मौसम आता तब वे वहां लौट आते। जैसे आजकल हम एक जगह बस कर रहते हैं वैसे वे लोग नहीं रह सकते थे।

चित्रों को एक बार फिर देखो। इन चित्रों में तुम्हें शिकारी मानव के पास कुछ ख़ास सामान भी नहीं दिख रहा है - न खाट-पलंग, न ही बर्तन-भांडे।

*क्या तुम बता सकते हो कि शिकारी मानव के पास ज़्यादा सामान क्यों नहीं रहता था?*

*क्या तुम यह भी कल्पना कर सकते हो कि जब एक झुंड एक जगह से दूसरी जगह जाता होगा, तो क्या-क्या चीज़ें साथ लेकर चलता होगा?*

*आज बहुत से लोगों को भोजन की तलाश में घूमना क्यों नहीं पड़ता है?*

*क्या कुछ लोग आज भी भोजन के लिए घूमते हैं? तुम उनके बारे में क्या जानते हो?*

## पत्थर के औज़ार

शिकारी मानव के पास कैसे-कैसे हथियार व औज़ार थे, तुमने चित्र में देखा।

उस समय लोहा, तांबा जैसी धातुओं के बारे में लोगों को नहीं पता था। फिर वे किस चीज़ के औज़ार बनाते थे? आस-पास जो मिलता था वह था पत्थर, लकड़ी, जानवरों के सींग और हड्डियां। इन्हीं को नुकीला बनाकर औज़ार बनाए जाते थे।

पृष्ठ 2 के चित्र 4 में दो आदमी बैठकर ऐसे औज़ार बना रहे हैं। वे पत्थर के टुकड़े को मार-मार कर इस तरह उसकी छीलन या चिप्पियां निकाल रहे हैं कि उसमें अच्छी धार बन जाये या बढ़िया नोक निकल आए। साथ ही पत्थर का आकार भी ऐसा हो जाए कि उसे हाथ में कस के पकड़ना आसान हो।

ये थे पत्थर के बड़े औज़ार। यह हुनर सीखते-सीखते मनुष्य ने पत्थर के बहुत बारीक टुकड़े बनाना भी सीख लिया था। ये पत्थर के छोटे और बारीक टुकड़े किसी लकड़ी के हत्थे में लग कर तेज़ औज़ार का काम देते थे।

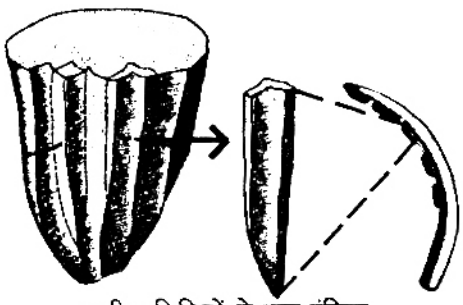

बारीक चिप्पियों से बना हंसिया

*नीचे पत्थर के औज़ारों के कुछ चित्र दिये गये हैं। क्या तुम इन चित्रों में पत्थर पर से निकाली गई चिप्पियों के निशान पहचान पा रहे हो? उन पर × का निशान लगाओ।*

*किन औज़ारों में लकड़ी के हत्थे लगे हैं? पहचानो, और लकड़ी के हत्थों में गहरा रंग भरो।*

*पत्थर के नुकीले टुकड़े हत्थे से दो तरह से जोड़े गए हैं। बताओ कैसे?*

*कौन से औज़ार हैं जो हत्थों मे नहीं फंसाए गए हैं?*

*पत्थर के औज़ारों से क्या-क्या किया जाता होगा?*

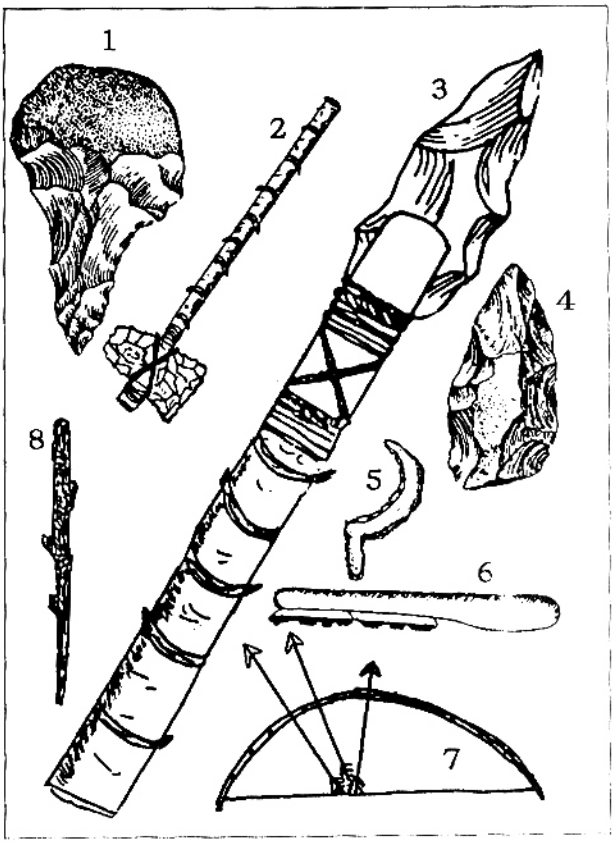


तरह-तरह के औज़ार

उस समय औज़ार बनाने के लिए अलग से कोई कारीगर नहीं था। झुंड के सब लोग औज़ार बनाया करते थे। हां यह ज़रूर हो सकता है कि कुछ लोग औरों से ज़्यादा अच्छे औज़ार बनाते हों।

पत्थर और लकड़ी के औज़ारों का उपयोग करते हुये उस समय के लोग तरह-तरह की चीज़ें बना लेते थे। महिलायें और पुरुष मिलकर इन औज़ारों से लकड़ी या बांस काटते, चीरते और उससे दूसरे औज़ार, टोकरियां, मछली के जाल आदि बना लेते। इन्हीं औज़ारों से पेड़ों की छालें छील के और जानवरों की खालें साफ कर के पहनने के लायक बनाते। वे लकड़ी, सीप, हड्डी, हाथी-दांत आदि की मालायें भी बनाते। इन चीज़ों को बनाने के लिए भी उन दिनों अलग से कारीगर नहीं थे। सब लोग अपने उपयोग की चीज़ें खुद बना लेते थे।

*रिक्त स्थान भरो :*

*1. शिकारी मानव ..... और ..... के औज़ार बनाते थे।*

*2. झुंड के ..... लोग औज़ार बनाते थे।*

*क्या आज लोग अपने उपयोग की सब चीज़ें खुद बना लेते हैं?*

*आज औज़ार किस चीज़ से बनते हैं?*

*आज-कल पत्थर का उपयोग कहां-कहां होता है?*

**चित्र और नाच**

शिकारी लोग गुफा के अंदर दीवारों पर रंगीन चित्र भी बनाया करते थे। क्या तुम जानते हो कि उन्हें रंग और ब्रुश कैसे मिलता था? वे रंगीन पत्थरों को घिस कर रंग तैयार करते थे, और बांस के ब्रुश से चट्टानों पर चित्र बनाते थे। इन लोगों द्वारा बनाए गए चित्र आज भी कई गुफाओं की दीवारों पर या चट्टानों पर देखे जा सकते हैं।

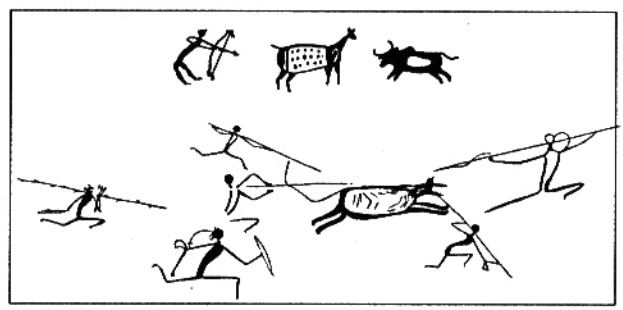

***ये लोग क्या-क्या चित्र बनाते थे? तुम खुद देख कर बताओ।***

चित्र बनाने के अलावा शिकारी मानव के जीवन में एक और चीज़ बहुत महत्व रखती थी। वे सब मिल कर देर-देर तक नाचते थे। आओ करमी की कहानी आगे पढ़ें और उनके नाच-गान के बारे में जानें।

करमी और उसके झुंड के बाकी लोग नए जंगल में पहुंच गए थे। वहां कुछ दिन खूब शिकार मिला। मगर फिर कई दिनों तक झुंड के लोग जंगल से खाली हाथ लौटने लगे। पूरे झुंड का गुज़ारा कन्द-मूल और फलों से चल रहा था। अब ये भी कम पड़ने लगे।

करमी की मां ने एक दिन झुंड के सारे लोगों

को बुला कर कहा, "यह हमारे लिए बहुत कठिन समय है। हमें कुछ करना होगा।" एक महिला बोली, "हां अब फल और कन्द भी खत्म होने को आये हैं।" एक आदमी बोला, "यहां जंगल में जानवर तो बहुत हैं। मगर न जाने क्यों वे न तो हमारे जाल में फंसते हैं और न ही हमारे तीरों का निशाना बनते हैं।"

करमी की मां बोली, "हम लोगों को नाच की **रस्म** करनी चाहिये। शायद जानवरों के देवता नाराज़ हैं।"

तो एक दिन नाच की रस्म शुरू हुई और सब लोग नाच में भाग लेने लगे। कुछ लोगों के सिर पर हिरण की खाल थी या उसका सींगदार **मुखौटा** था। बाकी लोगों के पास धनुष-बाण या भाला था। हिरण का मुखौटा पहनने वाला आदमी हिरण की चाल से नाचने लगा। बाकी लोग उसे घेर कर नाचने लगे। वे उसे हिरण मान कर उस पर झूठमूठ का **भोंथरा** बाण छोड़ने लगे। 'हिरण' घायल हो गया। दूसरे लोग उसे घेरे के बाहर घसीट कर ले गए और उस पर अपने चाकू चलाने का नाटक करने लगे। फिर सब घेरे में लौट आए और कोई दूसरा आदमी 'हिरण' का **स्वांग** करने लगा।

इस तरह यह नाच बहुत देर तक चलता रहा। उन लोगों के मन में कहीं यह विश्वास था कि नाच की यह पूरी रस्म करने से वे हिरणों पर टोना कर सकते हैं। वे मानते थे कि नाच के द्वारा शिकारियों को जादू की शक्ति मिलेगी और वे जानवरों को जादू की इस शक्ति से गहरे जंगलों से बाहर निकाल कर उनका शिकार कर लेंगे।

इस झुंड का एक सयाना आदमी था- **ओझा** जैसा एक आदमी। उसकी देखा-देखी ही सब लोग नाच करते थे। उसने गुफा की दीवार पर कुछ चित्र बनाये। जानवरों के चित्र, जानवर का मुखौटा व खाल ओढ़े लोगों के चित्र और नाच करते लोगों के चित्र। फिर उसने जानवर का शिकार करने का चित्र भी बनाया। सब लोगों ने जानवर के उस चित्र पर तीर मारे। वे मानते थे कि अब जब वे वास्तव में शिकार करेंगे तब उनका तीर इसी तरह निशाने पर लगेगा।

भीमबैठका की गुफा में बना नाच का चित्र

नाच व चित्रों की रस्म जब समाप्त हुई तब लोग फिर से टोलियां बना कर शिकार पर निकले।

***जब करमी की मां ने सुना कि जंगल में जानवर होते हुये भी शिकार नहीं मिल रहा तो उसने क्या सुझाव रखा? सही विकल्प चुनो:***

***1. दूसरे जंगल चले जायें। 2. कन्द-मूल से ही गुज़ारा करें। 3. नाच की रस्म करें।***

***रिक्त स्थान भरो :***

***1. नाचने वालों में से कुछ लोग हिरण का ——***

*पहने हुये थे।*

*2. वे ——— जैसे नाच रहे थे।*

*3. बाकी लोग उसे ——— के नाचते और उस पर झूठमूठ का ——— चलाते।*

*जानवरों के चित्र पर शिकारियों ने तीर क्यों मारा?*

शिकार

कई दिनों की कोशिश के बाद, एक दिन माको और उसकी टोली के लोग जब गुफा पर लौटे तो दो बड़े हिरणों को घसीटते हुए ला रहे थे।

कोरा अपनी टोली के साथ जब लौटा तो खाली हाथ ही था। उसके साथी बहुत परेशान थे क्योंकि उन्हें शिकार नहीं मिला था। पर गुफा के बाहर दो हिरणों को देखकर उनका भी चेहरा खिल उठा और उन्होंने खूब हंस-हंस कर माको और उसके साथियों की पीठ थपथपाई।

फिर क्या था! लोगों ने हिरणों को एक जगह रख दिया। सब शिकारी बारी-बारी से हिरणों के पास गए। उन्होंने अपने दाहिने हाथ से सिर से दुम तक हिरणों को सहलाया और झुंड को भोजन देने के लिए धन्यवाद दिया।

एक आदमी ने मरे हिरणों से कहा, "आराम करो, दादा। तुमने हमें अपना मांस दिया, इसके लिए धन्यवाद।"

दूसरे ने कहा, "तुमने हमें अपने सींग दिए हैं, हम तुम्हें इसके लिए धन्यवाद देते हैं।"

करमी की मां बोली, "हिरण भैया, हमारे कारण तुम्हें चोट लगी और तकलीफ हुई। हमें माफ करना।"

फिर झुंड के सब लोगों ने हिरण का मांस आग पर भून कर खाया। पत्थरों को टकरा कर आग बनाना तो वे जानते ही थे।

दो-तीन दिन बाद जब मांस सड़ने लगा तो लोगों ने उसे छोड़ दिया। फिर टोली बना कर शिकार पर निकले। औरतें भी बच्चों को ले कर फल व जड़ ढूंढने निकलीं।

कैसी अजीब बात है! शिकारी लोग अपने द्वारा मारे गये जानवरों को धन्यवाद दे रहे हैं! मगर वे लोग मानते थे कि जानवर मनुष्यों के भाई-बंधु हैं। जानवरों को मारना अपने भाईयों को मारने के समान है। इसलिए जानवरों को केवल ज़रूरत पड़ने पर, अपनी भूख मिटाने के लिए ही मारना चाहिए। जानवरों को मारने के बाद उन्हें धन्यवाद देना चाहिये और उनसे माफी भी मांगनी चाहिये।

मरे हिरण को धन्यवाद दे रहे हैं

इसीलिए वे मरे जानवर से ऐसी बातें कर रहे थे।

तुम भी अपने गांव में देखते होगे कि फसल कटने के बाद खलिहान में काटे गये अनाज की पूजा होती है।

*किसान फसल की पूजा क्यों करते हैं? कक्षा में चर्चा करो।*

*फसल की पूजा करना और मारे गये जानवर को धन्यवाद देना - क्या इन दोनों बातों में तुम्हें कोई समानता दिखती है?*

*सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरो-*

*1. कोरा ने जब देखा कि माको दो हिरण मार कर लाया है तो वह ——— हुआ। ( खुश/दुखी )*

*2. जब शिकारी लोग जानवर मार कर लाते थे तो वे उसे ——— थे। ( तुरन्त खा जाते/धन्यवाद देते )*

*3. शिकारी लोग मानते थे कि जानवर मनुष्यों के —— ( खाने के लिए/रिश्तेदार ) हैं और जानवरों को ——— ( जब चाहे तब/केवल अपनी भूख मिटाने के लिए ) मार सकते हैं।*

**मिल-बांट कर खाना**

कुछ इसी तरह की होती होगी उन लोगों की ज़िन्दगी। वे साथ शिकार करते थे क्योंकि अकेले व्यक्ति का जानवरों को मारना मुश्किल था। अकेला व्यक्ति जंगल में अपनी रक्षा भी नहीं कर सकता था। लोग टोलियों में भोजन इकट्ठा करने के लिए निकलते थे ।

जितना भोजन झुंड में आये सब मिल-बांट कर खाते थे। यह भी बहुत ज़रूरी था। जंगल से क्या मिलेगा, इसका कुछ भरोसा तो होता नहीं था। अगर मिल कर न खाते तो किसी दिन कोई भूखा रहता, और अगले दिन कोई और। किसी दिन कुछ लोगों के पास इतना खाना रहता कि खत्म न हो व सड़ने लगे और अगली बार उन्हीं के हाथ खाली होते। इकट्ठे खाने से ये दिक्कतें कम हो जातीं। सबको खाना मिलने का भरोसा रहता।

फिर, उन दिनों कोई ज़्यादा शिकार कर लाए तो उसे जमा करके भी नहीं रखा जा सकता था। मांस-फल जैसी चीज़ें जोड़-जोड़ कर रखी नहीं जा सकती थीं, क्योंकि वे सड़ कर खत्म हो जातीं थीं।

यही नहीं, शिकारी लोग तो घूमते रहते थे । अगर वे फलों को या बीजों को सुखा कर रख भी लेते तो लगातार एक जगह से दूसरी जगह कैसे ले जाते? इस कारण मांस व फल जैसी चीज़ों को जोड़-जोड़ कर कोई धनवान नहीं बन सकता था। शिकारियों के झुंड में कोई अमीर या ग़रीब नहीं होता था। खाना खा कर खत्म कर देते और फिर ढूंढने चल पड़ते।

जैसे करमी का झुंड था, वैसे बहुत सारे अलग-अलग झुंड थे। इन झुंडों के बीच कभी-कभी लड़ाई भी होती थी। कौन से झुंड के लोग किस जंगल में शिकार करेंगे, इसको लेकर उनमें छोटी-मोटी झड़पें भी हो जाती थीं।

*इस अंश के दो सबसे महत्वपूर्ण वाक्यों को चुनकर अपनी कापी में उतारो ।*

*तुमने पढ़ा कि कोरा की टोली को शिकार नहीं मिला था। फिर उनको भोजन कैसे मिला?*

ऐसे लोग थे हमारे पूर्वज। आज हमारा जीवन उनके जैसा नहीं है। बहुत अलग है। फिर भी ऐसी बहुत सी बातें हैं जो हमें इन पूर्वजों से ही पता चली हैं। शिकारी मानव ने ही पेड़-पौधों, फलों, कन्दों और जड़ी-बूटियों की जानकारी खोजी। उन्होंने जानवरों, मछलियों, कीड़े-मकोड़ों के बारे में कई बातें पता लगाईं। तरह-तरह के पत्थरों का पता लगाया। एक जगह से दूसरी जगह जाने के रास्ते बनाये। यही नहीं, वे जैसे नाचते थे, वैसा नाच आज भी कई अवसरों पर किया जाता है। क्या तुमने ऐसा नाच देखा है?

### शिकारी मानव के निशान

हज़ारों वर्षों पहले रहने वाले शिकारी मानव के बारे में हमें इतनी बातें पता कैसे चलती हैं? क्या उनकी कुछ चीज़ें बची हुई हैं? असल में शिकारी मानव के कई निशान आज भी मिलते हैं - जैसे पत्थर के औज़ार, गुफाओं पर बने चित्र, और जानवरों और लोगों की हड्डियां। गुफा चित्रों और पत्थर के औज़ारों के जैसे **उदाहरण** तुमने पाठ में देखे, वैसे और बहुत से उदाहरण मिलते हैं।

भोपाल से होशंगाबाद के रास्ते में तुम्हें भीमबैठका की गुफाएं मिलेंगी। इनमें जा कर तुम खुद ये चीज़ें देख सकते हो। हज़ारों सालों पहले ऐसी गुफाएं शिकारी मानव का बसेरा थीं।

मध्य प्रदेश में भीमबैठका के अलावा भोपाल, रायसेन, होशंगाबाद, बुदनी, पचमढ़ी, बघई खोर, भेड़ाघाट और महेश्वर में शिकारी मानव के निशान विशेष रूप से मिलते हैं।

### आज भी शिकारी लोग रहते हैं

शिकारी मानव के रीति-रिवाज़, तौर-तरीके और व्यवहार के बारे में पाठ में कई बातें लिखी हैं। ये सब हमें कैसे पता चलती हैं? हमने हज़ारों साल पुराने इन लोगों को देखा तो नहीं है! हम आज के शिकारियों को देख कर शिकारी मानव के बारे में इन सब बातों का अनुमान लगाते हैं। आज भी दुनिया की कई जगहों में शिकारी लोग रहते हैं। भारत में अंडमान द्वीप समूह में, केरला, आंध्र प्रदेश और अपने मध्यप्रदेश में भी ऐसे लोग रहते हैं।

कई लोग इन शिकारी लोगों के बीच में जा कर रहते हैं और उनके बारे में, उनके रहन-सहन, रीति-रिवाज़, आपसी व्यवहार आदि बातों का पता लगाते हैं।

इस चित्र में आंध्र प्रदश के चेंचू शिकारी कबीले के लोग दिख रहे हैं। ये लोग आज भी शिकार करके और फल-मूल बटोर कर गुज़ारा करते हैं। ये लोग या तो घस-फूस की झोपड़ियों में रहते हैं या फिर गुफाओं में रहते हैं।
इस चित्र को देखकर क्या तुम बता सकते हो कि पुराने शिकारी मानव और चेंचू लोगों में क्या-क्या फर्क है?

## अभ्यास के प्रश्न

**( सभी प्रश्नों के उत्तर अपने ही शब्दों में लिखो। )**

1. इस पाठ का शीर्षक है शिकारी मानव। पाठ के अलग-अलग हिस्सों में शिकारी मानव के बारे में तरह-तरह की जानकारी दी गई है। जैसे, शिकारी मानव के खाने, रहने, पहनने की जानकारी पहले हिस्से में दी गई है। इस हिस्से का उपशीर्षक है - **'भोजन, पहनावा और घर'**
   इस पाठ के और कितने हिस्से हैं, गिनो। पाठ के हरेक हिस्से से एक-दो बातें चुनकर शिकारी मानव के बारे में 10-12 महत्वपूर्ण (मुख्य-मुख्य) बातें लिखो।
2. शिकारी मानव के भोजन और तुम्हारे भोजन में दो मुख्य समानताएं और दो मुख्य अंतर बताओ।
3. शिकारी मानव के समय महिलायें क्या-क्या काम करतीं थीं?
4. तुमने पाठ में शिकारियों के बारे में एक दो कहानियां पढ़ीं। तुम भी उनके बारे में एक कहानी लिखने की कोशिश करो। नीचे दी गई कहानी को पूरा करो–
   बहुत समय पहले एक शिकारी झुंड में सामा नाम की औरत थी। वह झुंड की दूसरी औरतों के साथ जंगल से फल, कन्द-मूल आदि बटोर कर लाती थी। उसके पास जो भी खाने की चीज़ होती थी वह किसी के भी मांगने पर दे देती थी। उसने एक दिन सोचा, मैं जितने फल और बीज लाती हूं उन्हें सुखा कर रखूंगी। इस तरह मेरे पास खाने की बहुत सारी चीज़ें इकट्ठी हो जायेंगी। फिर मैं आराम से रहूंगी। वह फलों को सुखा कर रखने लगी। लेकिन.....
5. बहुत समय बाद का यह चित्र है। लोग शिकार कर रहे हैं।
   ये लोग किसकी सहायता से शिकार कर रहे हैं?
   चित्र में जंगली जानवर कौन से हैं? शिकारियों के पास क्या हथियार हैं? वे किन चीज़ों के बने हैं? ये लोग किसके बने कपड़े पहने हैं? इनके रहने की जगह क्या होगी? इन लोगों का भोजन क्या शिकार से ही आता होगा? क्या ये शिकारी मानव हैं?

इस पाठ की कहानी में हमने लोगों को हिन्दी में बोलते हुए बताया है। लेकिन उन दिनों आज बोली जाने वाली भाषाओं में बात नहीं की जाती थी। लोग बोला करते थे, पर कैसे- यह हम पूरी तरह नहीं जान सकते।